[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3452

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

मध्यकालीन संगीत में नवाचार

प्रो. उषा महोबिया
सहायक प्राध्यापक '' इतिहास ''
शा. महारानी लक्ष्मी बाई स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय किला भवन, इन्दौर (म.प्र)

भारत वर्ष में संगीत की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। प्रारभिंक हिन्दू शासकों ने अपने दरबार में संगीतकारो को आश्रय दिया किन्तु कट्टर मुसलमान शासकों ने संगीत को धार्मिक भावनाओ के कारण हेय दृष्टि से देखा अर्थात् इस्लामी नियमानुसार संगीत प्रेम निषेध है किन्तु अप्रत्यक्ष रूप से कुरान में भी मीठी आवाज की प्रशंसा की गई है। स्वयं खलीफा ने मधुर कण्ठ की तारीफ की है, अबूमूसा असारी कुरान का पाठ बडे ही मधुर स्वर में किया करता था । इस प्रकार संगीत निषिद्ध होते हुये भी प्रशंसा का पात्र बना रहा ।

भारत में मुसलमानो के आगमन से संगीत में परिवर्तन आए और नये रागों एवम वाद्य यत्रों का विकास एवं उत्पत्ति हुई । दिल्ली के अनेक सुल्तानो में संगीत के प्रति तटस्थता की भावना रही, कुछ ने अपने दरबार में संगीतज्ञो को आश्रय दिया तो कुछ ने निषेधाज्ञा निकलवाकर पूर्णतयाः अवहेलना की सुल्तान बल्बन, जलालुद्दीन, अलाउद्दीन तथा मुहम्मद बिन तुगलक अपने दरबार में संगीत द्वारा मनोंरजन करते थे। सुल्तान मुबारक शाह संगीत प्रेमी था । मुहम्मद तुगलक ने दौलता बाद में **''तखआबाद''** नामक महल बनवाया था। जिसमें शाही मेहमानो का मनोरंजन करने के लिए गाने वाली लड़कियां रखता था।

हिन्दू संस्कृति के संपर्क के आधार पर सूफी संतों ने श्रद्धा और प्रेम से ओतप्रोत, भजन गीत, और कविताओ के विकास एवम हिन्दू धर्म से मुसलमान जो बने वे भक्ति गीतो की भावनाओ को त्याग नही सके। जिसके फलस्वरूप मुसलमानो में संगीत के प्रति अनुराग उत्पन्न हुआ ।

सूफी संतों में अजमेर के मुईनुद्दीन चिष्ती तथा दिल्ली के निजामउद्दीन औलिया ने भक्ति भावना की कव्वालियों को प्रचलित किया। औलिया के शिष्य अमीर खुसरो एक महान संगीतकार थे। उन्होने भारतीय फारसी संगीत के समन्वय का काम किया । ध्रुपद के अतिरिक्त ख्याल संगीत को रूप देने का श्रेय खुसरो को प्राप्त है। खुसरो ने मुजिर, सजगिरी, ऐमन, उरषाक, तराना, निगार, बसित, शाहना, और सुहेल रागो का अविष्कार किया जो नवीन हिन्दू मुस्लिम संस्कृति को प्रस्तुत करते है। रागो के अलावा खुसरो ने प्राचीन भारतीय वीणा, ईरानी, तम्बुरे, के मेल से '' सितार '' का अविष्कार किया। मृदंग का रूप परिवर्तित कर उसे तबले का रूप दिया ।

सल्तनत काल में भैरवी, पीलू, सोहनी, आदि राग धार्मिक गोष्ठियो में गाय जाते थे। शाहना दरबारी और मालकोष दरबार के अंदर गाये जाने वाले प्रमुख राग थे। वास्तव में संगीत की चरर्मोन्नति तैमूर वंशीय शासकों के काल मे हुई।

मुंगल शासक भी संगीत के आश्रय दाता थे । बाबर स्वयं गाने का शौकीन था। उसने अपनी आत्मकथा में संगीत गोष्ठियों एवं गीतो की रचना का उल्लेख किया हैं । हूमांयु को भी संगीत सुनने का शौक था वह सूफी संतो के गानो में रूचि रखता था।

संगीत का वास्तविक विकास अकबर के युग हुआ उसके दरबार में कला और कलाकारो को संरक्षण दिया । हिन्दू, ईरानी, तुरानी, कश्मीरी, स्त्री पुरूष, आदि दरबारी संगीतज्ञ रहे।

अबुलफजल लिखता है '' अकबर को संगीत विद्या का इतना अधिक ज्ञान था जितने कुशल गवैये को भी नही होगा। वह नक्कारा बजाने में निपूण था ।''

अकबर के दरबार में अबुलफजल अब्दुररहीम खानखाना, राजा भगवानदास और मानसिंह जैसे राजदरबारी संगीतज्ञों को अपने यहां संरक्षण दिया । अकबर के बारे में कहा जाता है कि उसने अनेक रागों की रचना की थी । उसके दरबार का महान गायक तानसेन था। तानसेन ने कई रागों का अविष्कार किया । संगीतज्ञो को आश्रय मिलने से हिन्दुस्तानी संगीत, राग तथा

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

संगीत के संस्कृत ग्रंथों का फारसी भाषा में अनुवाद किया । हिन्दू मुस्लिम दोनो तरह के संगीतज्ञ अकबर के दरबार में थे। संगीत की शैलियो में समन्वय हुआ तथा तराना, ठुमरी, गजल, और कव्वाली में विकास हुआ।

जहाँगीर ने भी संगीत को संरक्षण दिया उसके दरबार में छत्रखां परवीज –ए– दाद, खुर्रमदाद, हमज और विलास खां आदि महान संगीतज्ञ हुये ।

शाहजहां संगीत प्रेमी होने साथ – साथ संगीत कला में दक्ष था। दीरंगखाँ, लालखाँ, जगन्नाथ, रामदास महापात्र, सुखसेन आदि उसके दरबार के महान संगीतज्ञ थे। संगीत कला का विकास औरंगजेब के समय अवरूद्ध हो गया । इसके पश्चात मुहम्मद शाह ने संगीत को प्रोत्साहित किया । अदारंग, सदारंग के ख्यालो से उसका दरबार गूंजता रहता था।

मुगलों की तरह दक्षिण के सुल्तान संगीत में विशेष रूचि रखते थे । गोलकुण्डा मे तो लगभग बीस हजार संगीतज्ञ रहते थे। यहां के हिन्दू गायक भजन गाने मे दक्ष थे।

आधुनिक संगीत अरबी, ईरानी, और हिन्दुस्तानी संगीत के सम्मिश्रण की देन है यहाँ भारतीय संगीत का आधार है। परन्तु इसमें ईरानी, अरबी, तथा पाश्चात्य संगीत की धुनो का समावेश हो गया है। समय के साथ–साथ संगीत में परिवर्तन हुये, और नवीन संगीत का आगाज हुआ ।

संदर्भ –

1 *भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास लेखक :– दिनेशचंद्र भारद्वाज*